(राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना ; नरेगा)

विकास खण्ड इन्दौरा में नरेगा – एक सफल अभियान

परिचय:– भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना कानून 2005 को देष के प्रथम चरण में लगभग 200 जिसमें हि0प्र0 के चम्बा और सिरमौर जिलों को शामिल किया गया था। अब यह कानून 2008 में पूरे हि0प्र0 में लागु किया जा चुका है। यह रोजगार सम्बधिन्त पहला ऐसा कानून है जो पूरे देष में पहली बार लागू किया गया है ।

उद्देष्य:– इस कानून का मुख्य उद्देषय हर ग्रामीण परिवार को एक निष्चित अवधि के लिए सुनिष्चित रोजगार प्रदान करने के साथ–साथ उस परिवार को आय का साधन उपलब्ध करवाना एवं ग्रामीण क्षेत्रो में परिसम्पतियों का निर्माण करना है।

विकास खण्ड इन्दौरा:– विकास खण्ड इन्दौरा के अन्तर्गत 49 पंचायते हैं। विकास खण्ड इन्दौरा का अधिकतर क्षेत्र पंजाब के साथ लगता है तथा लोंगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं बागबानी है। विकास खण्ड इन्दौरा में नरेगा कार्य योजना जून 2007 में शुरू हुई, जिसमें अभी तक इस योजना को लागू करने में काफी हद तक सफलता प्राप्त हुई हैं। नरेगा के अन्तर्गत लोगों को अपने घर द्वार पर 100 दिन का रोजगार मिल रहा है। इस कानून से लोगों की आर्थिक स्थिति सदृढ़ हुई है। इससे लोगों को बाहर जाकर काम तलाष करने की जरूरत नहीं पड़ती । इस योजना से खासकर महिलाओं और बूढ़े व्यक्तियों को बहुत लाभ

मिला है। जोकि पहले परिवार के अकेले कमाने वाले पर निर्भर रहते थे । इस योजना में गांवों का विकास भी हुआ है। विकास खण्ड इन्दौरा की प्रत्येक पंचायत में दो या तीन गांव है। इन में से ऐसे कई गांव है जोकि काफी पिछड़े हुए है। लेकिन नरेगा के द्वारा उन गांवों का काफी विकास हुआ है । इस योजना के तहत ऐसे कई गांवों का विकास हुआ

है जहां पर कभी पैदल चलना भी मुष्किल था अब वहां पर गाड़ी भी जा सकती है। ऐसे कई काम हुए है जोकि इस योजना की सफल कहानी है। उदाहरण के तौर पर ग्रम पंचायत गगवाल के ग्रम गगवाल को मुख्य सड़क से जोड़ने वाले रास्ते पर लोगों का चलना दुभूर था। किसी प्रकार का वाहन गांव से काफी दूर पीछे ही पहुंच पाता था।रास्ता जिस हालत में था, उस पर न केवल लोगों बल्कि मवेशियों का चलना भी मुश्किल था ; चित्र संख्या–1द्धबरसात के दिनों में रास्ते की हालत और भी खराब हो जाती थी।

सारा रास्ता दलदली बन जाता था। इसके चलते अधिकतम लोगों को अपने काम रोकने या टालने पड़ते थे। चुंकि यह रास्ता गांव का मुख्य रास्ता था, रास्ते की खराब हालत होने के कारण गांव का विकास हर तरफ से ठप्प पड़ा था। बड़ों के व्यवसाय का और बच्चों की पढ़ाई की भारी नुकसान हो रहा था। गांव के किसी व्यक्ति के बीमार पड़ जाने पर रास्ते की खराब हालत सबसे ज्यादा चुभती थी। कई बार तो मरीज की हालत सिर्फ खराब रास्ते की वजह से अस्पताल न पहुंचने के कारण और बिगड़ जाती थी। कुछ एक बार मरीज ने सिर्फ इसलिए दम तोड़ दिया क्योंकि उसे समय पर अस्पताल न पहुंचाया जा सका। गांववासी इस रास्ते को ठीक करना चाहते थे, परन्तु किसी उचित योजना के अभाव में उनकी सोच हकीकत में नहीं बदल पा रही थी। अन्ततः गांव वालों ने रास्ते को नरेगा के तहत बनवाया। रास्ता बन जाने के बाद गांव का हर वर्ग प्रसन्न है। रास्ता बन जाने से उनकी हर समस्या दूर होती हुई नजर आ रही है। हर व्यक्ति और गांव के विकास में बाधा डालने वाला रास्ता अब ठीक हो चुका है ;चित्र संख्या–1इद्ध । इस कार्य की सफलता समस्त ग्रमवासियों के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत बन चुकी है। कभी मायुसी में रहने वाले ग्रमवासी आज भविष्य के प्रति उत्साह से भरे हुए हैं। नरेगा ने तो जैसे लोगों की जिन्दगी बदल कर रख दी है।

एक अन्य उदाहरण के तौर पर ग्रम पंचायत कंग्रेड़ी के ग्रम वेहड़ी के तालाब की हालत काफी दयनीय थी। यह तालाब गांव वालों के लिए पानी का मुख्य स्त्रोत था। वह इस पानी से भुमि सिंचाई करते थे, जिससे कि उनकी फसल अच्छी होगी। लेकिन इस तालाब के पानी

का मुख्य स्त्रोत बरसात थी और इस तालाब की हालत ऐसी थी कि यहां पर पानी रूक ही नहीं पाता था ; चित्र संख्या–2द्ध ।क्योंकि इस तालाब की मिट्टी हल्की रेतली है और यह तालाब मलबे से भर चुका था। और इसकी सफाई बहुत जरूरी थी। इस तालाब से भुमि सिंचाई ही नहीं बल्कि पशुओं को पानी भी पिलाया जाता था और औरतें कपड़े भी यहां पर धोया करती थी क्योंकि यहां आस–पास पानी का कोई और स्त्रोत नहीं था। यहां पर पीने के लिए मुश्किल से एक समय में दो–तीन घंटे पानी आता था। इससे गांव वालों को काफी मुश्किल हो रही थी। उनके लिए यह तालाब ही एकमात्र सहारा था, क्योंकि यहां के लोगों का

व्यवसाय कृषि और पशुपालन है। पानी के अभाव के कारण उनका सारा काम जैसे रूका हुआ था। कई लोगों ने कृषि करना छोड़ दी थी तो कई लोगों ने अपने पशु ही छोड़ दिए थे। और कई बच्चों ने स्कूल जाना छोड़ दिया था, क्योंकि उन्हें अपने पशुओं को पानी पिलाने के लिए काफी दूर जाना पड़ता था। जिसमें उन्हें काफी समय लग जाता था। गांव वाले तो चाहते थे कि तालाब को साफ किया जाए और इसे

चारदीवारी भी करवाई जाए, लेकिन उनके पास कोई उपाय नहीं थी। आखिरकार गांव वालों ने तालाब को नरेगा के तहत ठीक करवाया ; तालाब ठीक होने वहां के लोग बहुत खुश हैं, क्योंकि अब उन्हें पानी के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। और अब बच्चे भी स्कूल जाते हैं। अब सारा काम समय पर पूरा ही रहा है, अब न तो कोई अपनी कृषि छोड़ रहा है और न ही कोई पशु छोड़ रहा है। इससे यहां के लोगों की आर्थिक स्थिति भी बहुत मजबूत हुई है। इससे गांव वालों और गांव का बहुत विकास हुआ है।

विकास खण्ड इन्दौरा में नरेगा के तहत लोगों का जीवन बदल देने वाले सिर्फ यही दो उदाहरण नहीं है, अपितु ऐसे अनेक गांव हैं यहां पर नरेगा के तहत किए गए कार्यो। में लोगों के जीवन में न केवल उत्साह भरा है बल्कि उन्हें जीने की एक और राह दिखाई है। पहले की भान्ति अब ग्प्रम विकास गरीब लोगों के रोजगार से अलग नहीं है। नरेगा के माध्यम से गांव का विकास, लोगों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति व उनको मिलने वाला रोजगार एक सूत्र में बन्ध गए हैं। पहले यहां एक तरफ विकास के कार्यों का चुनाव नेताओं व अफसरशाही पर निर्भर था वह अब ग्प्रम सभा के द्वारा किया जाता है, जिसमें गांव के हर व्यक्ति की भागीदारी होती है। नरेगा में हर प्रकार के कार्यों का निष्पादन किया जा सकता है। जिसकी वजह से गांव का समग्र एवं एकीकृत विकास सम्भव हुआ है।